اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 स़-फ़ह़ात) पूरा पढ़ कर अपनी आख़िरत का भला कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्यिब्ने कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, (फ़राइज़ वग़ैरा के इ़लावा) मैं अपना ***सारा वक़्त*** दुरूद ख़्वानी में स़र्फ़ करूंगा । ***सरकारे मदीना*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी और तुम्हारे गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा ।''

(तिरमिज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:207, ह़दीस़:2465, दारुल फ़िक्र बैरूत)

„Úè §Ü §Ü ¥Î æ Ð » Œ ² æÚ
¨ æ ÎÚÎ çÈÎ æ ã...æÚ ¨Hæ}æ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ना'त ख़्वानी आ'ला द-रजे की चीज़ है । अच्छी अच्छी ***निय्यतें*** कर के ना'त शरीफ़ पढ़ना और सुनना बाइ़स़े स़वाबे आख़िरत और मूजिबे ख़ैरो ब-र-कत है । मगर हर अ़मले ख़ैर के कुछ आदाब होते हैं इसी त़रह़ ना'त ख़्वानी के भी हैं । यक़ीनन वोह बड़ा ख़ुशनस़ीब है जिस को ख़ुश इल्ह़ानी की ने'मत मिले और वोह इस का सौ फ़ी स़द दुरुस्त इस्ते'माल करते हुए ***इख़्लास़*** के साथ ना'त ख़्वानी करे । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे यहां एक से एक ख़ुश आवाज़ ना'त ख़्वान كَثَّرَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی हैं जो कि ***आ़शिक़ाने रसूल*** के क़ुलूब को गरमाते और उन्हें इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में तड़पाते हैं । ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के स़नाख़्वानों की नज़रे बद और हुब्बे जाह व सरवत से ह़िफ़ाज़त फ़रमा । ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इन को और इन के स़दक़े मुझ गुनहगारों के सरदार अ़त्त़ारे बद अत्वार को बे ह़िसाब बख़्श दे । ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! ***उम्मते मुस्त़फ़ा*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमा ।

„ Ïæ çã ¨æÏæ Ïæwàæ çÜ ã Ïæ çã ¨æÏæ ...}æ
Î „æ ã ±æç ¨„æ „Ûæ àæææã çã...æ... Üæ

फ़िल्मी गीत का गुमान !

कुछ अ़रसे से एक तब्दीली देखने में आ रही है और वोह येह कि मख़्सूस़ टेकनिक के साथ बमअ़ ज़िक्रुल्लाह ईको साउन्ड पर कुछ इस त़रह़ ना'त ख़्वानी की जा रही है कि सुनने वाले को मह़सूस होता है की मूसिक़ी के साथ ना'त शरीफ़ पढ़ी जा रही है बल्कि जिस की ना'त ख़्वानी की त़रफ़ तवज्जोह न हो और अगर वोह सि़र्फ़ सरसरी त़ौर ***ज़िक्रुल्लाह वाली ना'त शरीफ़*** की आवाज़ सुने तो शायद येही समझे कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गाना बज रहा है । येह बात ***आ़शिक़ाने रसूल*** के लिये कितने बड़े स़दमे की है कि मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की स़ना ख़्वानी मह़ज़ पढ़नेवाले के अन्दाज़ के सबब कोई फ़िल्मी गीत समझ बैठे !

अल्लाह ﷻ अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ से *फ़रियाद है नफ़्स की बदी से*
ईमां पे बेहतर मौत ओ नफ़्स *तेरी नापाक ज़िन्दगी से*

तर्क कब अफ़्ज़ल होता है ?

मुरव्वजा ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी के जवाज़ व अ़दमे जवाज़ में उ़-लमाए अहले सुन्नत का इख़्तिलाफ़ चल रहा है । बा'ज़ मुबाह़ (जाइज़) केह रहे हैं और बा'ज़ ना जाइज़ व ह़राम । जब कभी ऐसी सूरत पैदा हो तो आ़फ़िय्यत इजतिनाब (या'नी बचने) ही में हुवा करती है । चुनान्चे **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामीए सुन्नत, माह़ीए बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़स़े ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते सरापा अ़ज़्मत में अ़र्ज़ की गई, ''(जब) सुन्नत व मकरूह में तआ़रुज़ (या'नी टकराव) हो तो क्या करना चाहिये ?'' फ़रमाया : ''तर्क औला (या'नी अफ़्ज़ल) है ।'' (अह़कामे शरीअ़त, स़-फ़ह़ा:228, नूर पब्लिशिंग हाऊस फ़राश ख़ाना दहली) देखा आपने ! सुन्नत व मकरूह में उ़-लमाअ का जब इख़्तिलाफ़ हो जाए तो तर्क अफ़्ज़ल होता है । तो फिर जहां मुबाह़ और ह़राम में तआ़रुज़ (टकराव) हो वहां बचना क्यूं न अफ़्ज़लतरीन ठहरेगा ! येह तो अ़मल में एह़तियात़ का पहलू है और त़लबगारे रिज़ाए रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ को मज़ीद दलाइल की ह़ाजत नहीं ।

ÝÏ㜠Üè Ý’„ Üè }ãçÈH ¨…Ý ã} Ý ÀÇx
²ã Ý’Ú ² Ú¨HËHã Hx Ý ã} Ý ÀÇx

मुसल्मानों को मुनाफ़िरत से बचाओ

फ़िक़्ही मसाइल में उ़-लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ कोई नई बात नहीं और इस में कोई क़बाहत भी नहीं मगर ''मुरव्वजा ज़िक्रवाली ना'त ख़्वानी'' कम अज़ कम पाक व हिन्द वालों के लिये एक नया त़रीक़ा है और इस की वजह से अ़वाम व ख़वास़ के एक त़बक़े को तश्वीश है। जब किसी ऐसे काम से मुसल्मानों में नफ़रत की कैफ़िय्यत जनम लेने लगे जिस का करना फ़र्ज़, वाजिब या ***सुन्नते मुअक्कदा*** न हो तो उस काम को तर्क करना होगा अगर्चे अफ़्ज़ल व मुस्तह़ब हो। चुनान्चे एक मक़ाम पर मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت मुसल्मानों के इत्तिहाद की ***अहमिय्यत*** को उजागर करने के लिये फ़रमाते हैं: ''लोगों की तालीफ़े क़ल्बी (या'नी दिलजूई) और उन को ***मुज्तमअ़*** (मुत्तह़िद) रखने के लिये ***अफ़्ज़ल को तर्क करना*** इन्सान के लिये जाइज़ है ताकि लोगों को नफ़रत न हो जाए जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عليه اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسليم ने बैतुल्लाह शरीफ़ की इमारत को इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बुन्यादों पर क़ाइम रखा ताकि नौ मुस्लिम होने की वजह से अहले क़ुरैश उस की नई बुन्यादों पर की जानेवाली ता'मीर को नफ़रत की निगाह से न देखें। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इजतिमाअ़ (इत्तिह़ाद) को क़ाइम रखने की मस्लह़त को मुक़द्दम समझा।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:680)

„ÚèÜ }S„Èè Ü ÀÇÝ ã ±Áã ÏÚÏÎè
§¨è¨ Ü} Î‹² } ã§ Ï §çv„ ÎÚ ¥ÐÝè

अंगुश्त नुमाई के अस्बाब मकरूह हैं

मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت एक और मक़ाम पर मुसल्मानों को आपसी नाराज़गी और ***ग्रूपबन्दी*** से बचाने के लिये रक़म त़राज़ हैं: ''एक नुक्ता याद रखना चाहिये कि अपने मुल्क और शहर में आ़म मुसल्मानों की जो वज़्अ़ (या'नी ज़ाहिरी ह़ालत) और त़र्ज़ व त़रीक़ा हो उसे छोड़ देना और दूसरी वज़्अ़ जो तश्हीर (या'नी शोहरत) और ***अंगुश्त नुमाई*** का सबब है उसे इख़्तियार करना मकरूह है। चुनान्चे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं: अपने शहर की आ़दत और त़रीक़ए कार से बाहर हो जाना वजहे शोहरत और मकरूह है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:22, स़-फ़ह़ा:193)

} ±ã à§Ú Ýãè çÜ ™Î Üã Î ©Ý Ü ™ãÚ Ü
} ©Ý Ü ÝvàÐ ÐÚ ™Î Ü ÜÚÏÝ ÜÚ„ ã

फ़ित्ने का ख़ौफ़ हो तो मुस्तह़ब तर्क करना होगा

मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में मुस्तह़ब काम करने के बारे में इस्तिफ़्ता पेश हुवा, चूंकि फ़ी ज़माना उस अम्रे मुस्तह़ब पर हिन्द के अन्दर अ़मल करने में फ़ित्ने का एह़तिमाल था लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया: जहां इस का रवाज है मुस्तह़ब है, इन बलाद (हिन्द के शहरों) में कि इस का (नाम व) निशान नहीं, अगर वाक़ेअ़ हो (या'नी कोई करे) तो जुह्हाल (या'नी जाहिल लोग) हंसें, और मस्अलए शर-इय्या पर हंसना अपना दीन बरबाद करना है, तो यहां इस पर इक़्दाम (या'नी अ़मल) की ह़ाजत नहीं। ख़ुद एक ***मुस्तह़ब*** बात करनी और मुसल्मानों को ऐसी सख़्त बला (या'नी शरीअ़त के मसाइल पर हंसने की आफ़त) में डालना पसन्दीदा नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:22, स़-फ़ह़ा:603)

§Hãè Î }Ú çÎH Ü x} §àÜ
Ýà„ ÎãÚ ¨ ã …ª Ý ¶à

ख़ुशख़बरी सुनाओ, नफ़रत न दिलाओ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! पेश कर्दा जुज़्इय्यात से اَظْهَرُ مِنَ الشَّمس وَ اَبْيَنُ مِنَ الْاَمْس (या'नी सूरज की त़रह़ रौशन और शाम की त़रह़ ज़ाहिर) हुवा कि लोगों का मुरव्वजा त़रीक़ा जिस की शर-अ़न मुमानअ़त न हो उस से हट कर कोई भी ऐसा फ़े'ल न किया जाए जिस से लोगों में नफ़रतें फैलें बल्कि **किसी मुस्तह़ब काम से भी अगर मुसल्मानों में फूट पड़ती हों, फ़ित्ने खड़े होते हों, नाराज़गियां और दूरियां पैदा होती हो, लोग बदज़न होते हों तो मुसल्मानों की दिलजूई की ख़ातिर उस मुस्तह़ब को तर्क करना होगा। मुसल्मानों को नफ़रत व वह़शत से बचाना बहुत ज़रूरी है।** जैसा कि हुज़ूरे अकरम, ***नूरे मुजस्सम,*** शाहे बनी आदम, ***रसूले मोह़्तशम*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है: بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا या'नी ***ख़ुश ख़बरी सुनाओ और*** (लोगों को) ***नफ़्रत न दिलाओ।*** (बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:42, ह़दीस़:69, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत, फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:22, स़-फ़ह़ा:339) मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت का फ़रमाने इब्रत निशान है: मुसल्मानों की आ़दत का ख़िलाफ़ करना और वह़शत दिलाना येह जाइज़ नहीं।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:22, स़-फ़ह़ा:339)

www.dawateislami.net

àæÏæ |æÚ ¨æÝ ãè ¨ xæ-Ú... fè „æÚæ Ý ã...æÚ Îæ„ Ðè¨
çÎÝ |æÚ ¶Hæ}æ ¶æÜ ©Çæ§ Hæ... ¥æ§ Ý ...Úæ Üè ã¨è ¨`

गुनाहों का दरवाज़ा खुल गया है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुरव्वजा ज़िक्रवाली ना'त ख़्वानियां हमारे यहां के लोगों के मिज़ाज के मुताबिक़ नहीं जभी तो मुसल्मानों में इफ़्तिराक़ व इन्तिशार फैल रहा है, उ-लमाए किराम और अवाम के दरमियान नफ़्रतों की दीवार क़ाइम हो रही है, आपस में बुग़्ज़ व इनाद की जड़ें उस्तुवार हो रही हैं, **ग़ीबतों, चुग़्लियों, इल्ज़ाम तराशियों, दिल आज़ारियों और बद गुमानियों का एक तूफ़ान खड़ा हो गया है जिस के सबब कबीरा गुनाहों और जहन्नम में ले जानेवाले कामों का एक बहुत बड़ा दरवाज़ा खुल चुका है ।** इस की ताज़ा तरीन मिसाल येह है कि बाबुल मदीना कराची में होनेवाली एक अज़ीमुश्शान महफ़िले ना'त में जब ज़िक्र वाली ना'त शुरूअ़ हुई तो एक मश्हूर व मा'रूफ़ ***मोह़तरम सुन्नी आ़लिम*** ने इस पर टोका, इस पर ***मोअ़ज़्ज़ज़ ना'तख़्वान*** मंच से ऊतर कर चल दिये । दूसरे ना'त ख़्वान पढ़ने आए तब भी वोही अन्दाज़ था तो चूंकि इन आ़लिम स़ाहि़ब के नज़्दीक एक गुनाह का काम हो रहा था इस लिये वहां से चला जाना उन के लिये वाजिब था, लिहाज़ा येह भी उठे और महफ़िल से तशरीफ़ ले गए । नतीजतन उन आ़लिम स़ाहि़ब के मुरीदीन व ***मुह़िब्बीन*** और ***ज़िक्र वाली ना'त शरीफ़*** के क़ाइलीन व शाइक़ीन के दरमियान झड़प हो गई और नौबत हाथा पाई तक जा पहुंची । आह ! आह ! आह !

çÎH Ü ÈÈæH ...H ©Æ ¨èÝ Ü Îæxæ ¨
§ ¨ ÍæÚ Üæ ¥æxæ Hxæ xæ§ ÍæÚ Ü ™Úæxæ ¨

सुन्नत पर अ़मल के ह़राम होने की सूरत

आह ! शैत़ान नेकियों का भरम दिला कर भी कैसे कैसे घिनौने खेल खेलता है कि मुसल्मान को बसा अवक़ात नफ़्ली कामों की ख़ातिर ***ईज़ाए मुस्लिम*** जैसे ह़राम कामों में झोंक देता है ! शरीअ़ते इस्लामिय्या ***एह़तिरामे मुस्लिम*** करनेवालों की पज़ीराई और ***ईज़ाए मुस्लिम*** के इर्तिकाब की सख़्त ह़ौस़ला शिकनी करती है । मुसल्मान को ईज़ा पहुंचती हो तो सुन्नत पर अ़मल करना भी बा'ज़ सूरतों में ह़राम हो जाता है । म-स़लन नमाज़े फ़ज्र व ज़ोहर में ***त़ुवाले मुफ़स्सल*** (सूरतुल ह़ुजुरात ता सूरतुल बुरूज को ***त़ुवाले मुफ़स्सल*** केहते हैं) से पूरी दो सूरतें हर रक्अ़त में सूरए फ़ातेह़ा के बा'द एक एक सूरत पढ़नी सुन्नत है । एक क़ौल के मुत़ाबिक़ फ़ज्रो ज़ोहर में ***सूरए फ़ातेह़ा*** के इलावा मजमूई त़ौर चालीस या पचास और दूसरी रिवायत के मुत़ाबिक़ साठ से ले कर सौ तक आयतें पढ़ी जाएं । अलबत्ता कोई मरीज़ या ऐसा आदमी नमाज़ में शामिल हो जिस को जल्दी है और देर होने की सूरत में उस को तकलीफ़ होगी तो ऐसी सूरत में तकलीफ़देह ह़द तक त़वील क़िराअत करना ***ह़राम*** है । मज़्कूरा मस्अला और उस के ***मुतअ़ल्लिक़*** मुन्दरिजए ज़ैल जुज़इय्या ***ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी*** का हुक्म बयान करने के त़ौर पर नहीं, मह़ज़ ***तख़्वीफ़*** (या'नी डराने) के लिये है कि कहीं हमारे ना'त ख़्वान इस्लामी भाई ईज़ाए मुस्लिम के मुर्तकिब न हो रहे हों क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात नेकी का काम नज़र आनेवाली बात भी गुनाह का काम होती है जिस का हमें इल्म नहीं होता चुनान्चे मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّبِّ الْعِزَّت ***फ़तावा र-ज़विय्या,*** जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:325 पर फ़रमाते हैं : ''यहां तक कि अगर हज़ार आदमी की जमाअ़त है और सुब्ह़ की नमाज़ है और ख़ूब वसीअ़ वक़्त है और जमाअ़त में 999 आदमी दिल से चाहते हैं कि इमाम बड़ी बड़ी सूरतें पढ़े मगर एक शख़्स़ बीमार या ज़ईफ़ बूढ़ा या किसी काम का ज़रूरत मन्द है कि इस तत्वील (या'नी त़वालत) बार होगी उसे तकलीफ़ पहुंचेगी तो इमाम को ***ह़राम*** है कि तत्वील (या'नी त़वालत) करे बल्कि हज़ार में इस एक के लिहाज़ से नमाज़ पढ़ाए जिस त़रह मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ उस औरत और उस के बच्चे के ख़याल से नमाज़े फ़ज्र ***मुअ़व्वज़तैन*** (या'नी सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास) से पढ़ा दी । ह़दीसे़ (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में है : और मुआ़ज़ इब्ने जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ पर तत्वील में सख़्त नाराज़ी फ़रमाई यहां तक कि रुख़्सारए मुबारक शिद्दते जलाल से सुर्ख़ हो गए और फ़रमाया : क्या तू लोगों को फ़ित्ने में डालनेवाला है ! क्या तू लोगों को फ़ित्ने में डालनेवाला है ! क्या तू लोगों को फ़ित्ने में डालनेवाला है ऐ मुआ़ज़ ?''

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:902, क़दीमी कुतुब ख़ाना, बाबुल मदीना कराची)

मुसल्मानों को फ़ित्ने से बचाइये

मीठे मीठे ना'त ख़्वानों ! *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ आप का मुंह सलामत रखे । ख़ुदारा ! मान जाइये ! और सिर्फ़ पुराने अन्दाज़ पर ना'तें पढ़ने की तरकीब बनाइये । यक़ीनन दुन्या का कोई भी मुफ़्तीए इस्लाम ***मुरव्वजा ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी*** को वाजिब नहीं कहेगा, ज़ियादा से ज़ियादा वोह मुबाह़ (जाइज़) कहेगा । अगर बिलफ़र्ज़ कोई मुफ़्ती स़ाहि़ब मुस्तह़ब भी क़रार दे दें तब भी ह़ालाते ह़ाज़िरा का तक़ाज़ा येही है कि इस अम्रे मुस्तह़ब को तर्क कर दिया जाए क्यूंकि इस से मुसल्मानों के मा बैन नफ़्रत का सिल्सिला चल निकला है और तन्फ़ीरे मुस्लिमीन से बचने के लिये ज़रूरतन मुस्तह़ब को तर्क कर देने का हुक्म है । जैसा कि मेरे

www.dawateislami.net

आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت मुसल्मानों के दरमियान प्यार व ***मह़ब्बत*** की फ़ज़ा क़ाइम रखने का एक ***म-दनी उसूल*** बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ''इत्याने मुस्तह़ब व तर्के ग़ैरे औला पर मुदाराते ख़ल्क़ व मुराआते क़ुलूब को अहम्म जाने और फ़ित्ना व नफ़रत व ईज़ा व वह़शत का बाइस होने से बहुत बचे।'' (फ़तावा र-ज़विय्या तख़रीज शुदा, जिल्द अव्वल, स़-फ़ह़ा:14) इस इर्शादे रज़वी के बा'द सरकारे ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت के माननेवालों को ***ज़िक्रवाली ना'त शरीफ़*** पढ़ने से बचना ही चाहिये इस लिये कि उन का येह फ़े'ल फ़ित्ना व नफ़रत व ईज़ा व वह़शत का बाइस बन रहा है और मुझ सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ और दीगर बे शुमार मुसल्मानों को इस से सख़्त तश्वीश है। इस इर्शादे ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت का मफ़हूम येह है कि मुस्तह़ब अ़मल को भी तर्क करना पड़े तो कर दे मगर लोगों के दिलों की ख़ुशी को मुक़द्दम रखे और फ़ित्ना व फ़साद का सबब बनने से दूर रहे। एक दूसरे के ख़िलाफ़ चेमगोइयां कर के फ़ित्ने खड़े करनेवालों को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से बहुत बहुत बहुत डरना चाहिये। आप की ख़ैरख़्वाही के जज़्बे के तह़त सरकारे **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت का एक फ़तवा अ़र्ज़ करता हूं। येह फ़तवा मज़कूरा मस्अले में शर-ई हुक्म के त़ौर पर नहीं बल्कि फ़ित्ने के ह़वाले से अपनी अपनी इस्लाह़ की त़रफ़ तवज्जोह दिलाने के लिये है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت फ़ित्ने से बचने की ताकीद करते हुए नक़्ल करते हैं कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ पारह 30 सूरतुल बुरूज की आयत नम्बर 10 में इर्शाद फ़रमाता है :

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ
عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जिन्होंने ईज़ा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों को फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिये आग का अ़ज़ाब। (पारह:30, अल बुरूज:10)

इस आयते मुक़द्दसा के तह़त ***मुफ़स्सिरे*** शहीर ***ह़कीमुल उम्मत*** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان येह भी फ़रमाते हैं : ''मुसल्मानों में ***फ़ित्ना*** फैलानेवाला बड़ा मुजरिम है, आ़लिम को चाहिये कि ऐसा ग़ैर ज़रूरी मस्अला न बयान करे जिस से ***फ़ित्ना*** हो।'' (नूरुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:975)

मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت ***फ़तावा र-ज़विय्या*** जिल्द:21 स़-फ़ह़ा:253 पर फ़रमाते हैं : मुसल्मानों में बिला वजहे शर-ई इख़्तिलाफ़ व फ़ित्ना पैदा करना नयाबते शैत़ान (है।) (या'नी ऐसे लोग इस मुआ़मले में शैत़ान के नाइब हैं) ह़दीसे पाक में है : फ़ित्ना सो रहा है उस के जगाने वाले पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत।

(कश्फ़ुल ख़िफ़ा, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:77, ह़दीस़:1815, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

उ़-लमाअ की तौहीन कुफ़्र तक पहुंचाती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चूंकि बा'ज़ उ़-लमाए किराम ज़िक्रवाली ना'त शरीफ़ पढ़ने को जाइज़ और बा'ज़ मूसीक़ी वाले अन्दाज़ की वजह से ना जाइज़ व ह़राम केहते हैं। जब कि नफ़्स पक्का मत़लबी है, इसने वोही फ़तवा पसन्द करना है जो अपने मोक़िफ़ का मुअय्यिद (ताईद करनेवाले) है लिहाज़ा इस मुआ़मले से ''फ़ाइदा उठाते हुए'' मर्दूद शैत़ान बा'ज़ लोगों की ज़बान से उ़-लमाए मानेईन की तौहीन पर मुश्तमिल कलिमात ज़बान से निकलवा कर, ऊलफ़ूल बकने वालों की ताईद करवा कर उन के ईमानों से खेलने की कोशिश कर रहा होगा और इन बेचारों को कानों कान ख़बर भी न होगी। लिहाज़ा ईमान की ह़िफ़ाज़त के ख़ैरख़्वाहाना जज़्बे के तह़त ज़िम्नन बा'ज़ जुज़्इय्यात अ़र्ज़ करता हूं : (1) मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : आ़लिमे दीन सुन्नी स़ह़ीह़ुल अ़क़ीदा कि लोगों को ह़क़ की त़रफ़ बुलाए और ह़क़ बात बताए ***मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाइब है। ***इस की तह़क़ीर*** مَعَاذَ الله ***मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***की तौहीन*** और ***मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में गुस्ताख़ी मूजिबे ला'नते इलाही व अ़ज़ाबे अलीम है। रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''तीन शख़्सों के ह़क़ को हल्का न जानेगा मगर ***मुनाफ़िक़ खुला मुनाफ़िक़,*** एक वोह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, दूसरा ***इ़ल्मवाला,*** तीसरा बादशाहे इस्लाम आ़दिल।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:23, स़-फ़ह़ा:648 ता 649) (2) ''मौलवी लोग क्या जानते हैं'' इस (जुम्ले) से ज़रूर उ़-लमाअ की तह़क़ीर (तौहीन) निकलती है और उ़-लमाअ की तह़क़ीर कुफ़्र है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:14, स़-फ़ह़ा:244) (3) फ़ुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : اَلْاِسْتِخْفَافُ بِالْاَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرٌ या'नी सादात व उ़-लमाअ की तख़्फ़ीफ़ व तह़क़ीर कुफ़्र है। (मजमउ़ल अनहर, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:509, कोइटा)

}æÛæ Üæ » ¥œææÚ ¨‹Ýè ¥æçH}ææ ¨ Œ²æÚ ã

Îæ ...ãæ }æ اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ¥ÐÝæ ÏæÇæ ÐæÚ ã

मुसल्मानों का दिल ख़ुश कीजिये

क्या ही अच्छा हो कि सभी का मन्ज़ूर शुदा वोही पुराना ***मुत्तफ़िक़ा*** अन्दाज़ अपना लिया जाए ताकि एक बार फिर सारे ही सुन्नी ***ना'त ख़्वानी*** के तअ़ल्लुक़ से ***मुत्तहिद, मुत्मइन*** और ***ख़ुश*** हो जाएं और गुनाहों और नफ़्रतों का सिल्सिला बन्द हो। ***एहतिरामे मुस्लिम*** और मुसल्मान का दिल ख़ुश करने की ***अहम्मिय्यत का*** अन्दाज़ा फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा की जिल्द:7, स-फ़हा:230 पर मौजूद मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّبِّ الۡعِزَّت के इस मुबारक फ़तवे से लगाइये। चुनान्चे कुछ इस त़रह़ सुवाल हुवा कि जमाअ़त का मुक़र्ररा वक़्त हो गया, इतने में मज़ीद दो चार नमाज़ी आ गए मगर उन के वुज़ू से फ़ारिग होने से पहले ही जमाअ़त खड़ी हो गई। आया उन का इन्तिज़ार करना चाहिये था या नहीं ? इस का जवाब देते हुए मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّبِّ الۡعِزَّت ने फ़रमाया :

"येह दो चार शख़्स़ जो बा'द को आए और उन के वुज़ू कर लेने का इन्तिज़ार न किया और जमाअ़त क़ाइम कर दी। अगर येह लोग अहले मह़ल्ला से न थे, उन्हें जमाअ़त के वक़्ते मुक़र्ररा का इल्म न था और वक़्त में तंगी भी न थी और ह़ाज़िरीन में से किसी पर इन्तिज़ार से कोई ज़रर ह़-रज भी न था तो इस सूरत में उन के वुज़ू से फ़ारिग़ हो लेने का इन्तिज़ार कर लेना मुनासिब था। ***ख़ुसूसन जब कि इस इन्तिज़ार न करने में उन की दिल शिकनी हो कि बिला वजह किसी मुसल्मान की दिल शिकनी बहुत सख़्त बात है।*** दो चार मिनट में वुज़ू हो जाएगा, इस में उन (देर से आनेवालों) का एक नफ़्अ़ और अपने (या'नी इन्तिज़ार करनेवाले इमाम व मुक़्तदियों के) तीन मनाफ़ेअ़, उन का (नफ़्अ़) तो येह कि तक्बीरे ऊला पा लेंगे और अपना (1) पहला नफ़्अ़ येह है कि उस (तक्बीरे ऊला की) फ़ज़ीलत के मिलने में मुसल्मानों की इआ़नत (मदद) हुई और इस का अज्रे अ़ज़ीम है। कालल्लाहु तआ़ला (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है:)

تَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى

(पारह:6, अल माइदह:2) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:** नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो) यहां तक कि ऐन नमाज़ में इमाम को चाहिये कि अगर रुकूअ़ में किसी की पहचल (क़दमों की चाप) सुने और उसे पहचाना नहीं तो दो एक तस्बीह़ ज़ियादा कर दे तो वोह शामिल हो जाए (२) दुवुम (नफ़्अ़) इस रिआ़यत (न इन्तिज़ार) से उन मुसल्मानों का दिल ख़ुश करना। ***मुतअ़द्दद*** अह़ादीस़ में है : फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा मुसल्मान का दिल ख़ुश करना है।" (अल जामेउ़स्सग़ीर मअ़ फ़ैज़ुल क़दीर, जिल्द:1, स-फ़हा:167, ह़दीस़:200, दारुल मा'रिफ़ा बैरूत) (3) तीसरा नफ़्अ़ उन के आने तक नमाज़ का इन्तिज़ार करने के सबब मिलनेवाला स़वाब है चुनान्चे) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक है : "बेशक तुम नमाज़ ही में हो जब तक नमाज़ के इन्तिज़ार में हो।" (बुख़ारी, जिल्द:1, स-फ़हा:84,90 क़दीमी कुतुब ख़ाना बाबुल मदीना कराची)

¨™ ã §‹ ¨‡Ý Ü‡ ÜÀ ¶‡ Ü ç}‡H‡ ÜÚ„‡ ã

¥‡Ð Ü‡ ¶‡ Ü „Û‡ Ð‡››x‡‡ …‡²‡ „Ú‡

ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी से भी तो दिल ख़ुश होते हैं

सुवाल: बानियाने मजलिस या सामेईन फ़रमाइश करें तो इन मुसल्मानों का दिल ख़ुश करने की निय्यत से नीज़ मोडर्न नौ जवान इस बहाने मह़फ़िले ना'त में आ जाते हों इस वजह से अगर ***ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी*** कर ली जाए तो क्या ह़-रज है ?

जवाब: बेशक मुसल्मानों का दिल ख़ुश करना नीज़ मोडर्न नौ जवानों को दीन के क़रीब लाना ख़ूबियां हैं मगर ***ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी*** करने से मुसल्मानों में नफ़्रतें फैल रही हैं जो कि बहुत बड़ी ख़राबियां हैं और ख़राबियों के अस्बाब से बचने के लिये ख़ूबियों के अस्बाब का लिह़ाज़ नहीं किया जाएगा। इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि अगर नफ़्अ़ ह़ासिल करने की ख़ातिर नुक़्सान उठाना पड़ता हो तो उस नफ़्अ़ को तर्क करना होगा। जैसा कि मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّبِّ الۡعِزَّت शरीअ़ते मुत़ह्हरा का क़ाइदा बयान करते हुए फ़रमाते हैं : دَرۡءُ الۡمَفَاسِدِ اَهَمُّ مِنۡ جَلۡبِ الۡمَصَالِح या'नी ख़राबियों के अस्बाब दूर करना ख़ूबियों के अस्बाब ह़ासिल करने से अहम्म है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:9, स-फ़हा:155)

मैं समझता हूं जिन्होंने जवाज़ का फ़तवा इनायत फ़रमाया है उन उ-लमाए किराम को भी अगर ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानियों के सबब सुन्नियों के मा बैन उठ खड़े होने वाले नफ़्रतों और अ़दावतों के तूफ़ान का इल्म हो गया या इन ह़ज़रात की ख़िदमात में सूरते ह़ाल बयान की गई तो वोह भी ह़ालात के पेशे नज़र **ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी** की अब हर गिज़ इजाज़त नहीं देंगे।

ना'त ख़्वानों से हाथ जोड़ कर म-दनी इल्तिजा

मेरा हुस्ने ज़न है कि हर सुन्नी ना'त ख़्वान मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّبِّ الۡعِزَّت का चाहनेवाला है और हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से ज़िक्र के साथ ना'त शरीफ़ पढ़नेवालों की ग़ालिब अक्स़रिय्यत मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّبِّ الۡعِزَّت ही के सिल्सिले में बैअ़त भी है और सआ़दत मन्द मुरीदों के लिये अपने मुर्शिद का एक ही इशारा काफ़ी है मगर

हमारे पीरो मुर्शिद सराकेर ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّبِّ الْعِزَّت का एक इशारा नहीं ***मुतअ़द्दद*** इशारात मिल चुके हैं जिन की रौशनी में ***ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी*** का तर्क ज़रूरी हो गया कि इस की वजह से न सिर्फ़ फ़ित्ने का इम्कान बल्कि फ़ित्ना वाक़ेअ़ भी हो चुका । **उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त मेरी तमाम ना'त ख़्वानों से हाथ जोड़ कर, पांव पकड़ कर म-दनी इल्तिजा है कि कोई भी ना'त ख़्वान इस्लामी भाई आइन्दा ज़िक्र वाली ना'त शरीफ़ की तरकीब न बनाए ।** बिलफ़र्ज़ कोई ***ना'त ख़्वान*** ऐसा निकल भी आए जो मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّبِّ الْعِزَّت के फ़रमूदात और फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ के बयान कर्दा जुज़्इय्यात से अ़दमे इत्तिफ़ाक़ के सबब या फिर अपने नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर ***ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी*** से बाज़ न आए तब भी दीगर ना'त ख़्वान इस्लामी भाई उस की रीस न फ़रमाएं । उस से उल्झें भी नहीं और उस की दिल आज़ारी से भी बाज़ रहें । **जिन इस्लामी भाइयों के घरों में समाअ़त के लिये या दुकानों में तिजारत के लिये ज़िक्र वाली ना'तों की केसेटें हैं उन से भी म-दनी इल्तिजा है कि थोड़ा सा माली ख़सारा बरदाश्त करते हुए इन में सादा ना'तें या बयानात डब कर लें और फ़ित्ना व फ़साद का दरवाज़ा बन्द करवाने में मेरी इम्दाद फ़रमाएं ।**

दुआ़ए अ़त्तार

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे ना'त ख़्वानों को मुरव्वजा ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी से बाज़ आने, और इस्लामी भाइयों को ऐसी ना'तों की तमाम केसेटों में सादा ना'तें या सुन्नतों भरे बयानात डब करवा लेने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा । उन सब को और उन के स़दक़े में मुझ पापी व बदकार को मदीने के ताजदार हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बारबार दीदार नस़ीब फ़रमा, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी क़ब्रों में म-दनी मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वे हों और मह़शर में शफ़ाअ़त की ख़ैरात मिले, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! जन्नतुल फ़िरदौस में हम सब को हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पडौ़स इनायत फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ç…<Îxæè |æÚ {}æ Ýæ’„æ Üè }æ™æ„ …æ»xæ

²æ Ú¨HËHæã ﷺ Üæ Ýæ’Úæ Hxææ„ …æ»xæ

एक चुप सौ सुख

तालिबे ग़मे मदीना व

बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व

बे ह़िसाब

जन्नतुल फ़िरदौस

में आक़ा का पड़ौस

8 र-जबुल मुरज्जब 1428

ग़ीबत का अ़ज़ाब

मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **फ़रमाते हैं : ''मैं शबे मे'राज ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों का तांबे के नाख़ुनों से छील रहे थे । मैंने पूछा, ऐ जिब्रईल ! येह कौन लोग हैं ? कहा, येह लोगों की ग़ीबत करते और उन की इज़्ज़त ख़राब करते थे ।** (सुनने अबी दावूद शरीफ़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:313)

बोहतान का अ़ज़ाब

जो शख़्स़ किसी मुसल्मान पर बोहतान लगाए (या'नी ऐसीचीज़ कहे जो उस में नहीं) तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***उसे रदगतुल ख़बाल में उस वक़्त तक रखेगा जब तक उस की सज़ा पूरी न हो ले ।*** (अबू दावूद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:297)

(रदगतुल ख़बाल जहन्नम में एक मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होगा ।)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, अअ़रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में ***मक्त-बतुल मदीना*** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़्लेट तक़्सीम कर के स़वाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते स़वाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد